ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

संविधान निर्माता के रूप मे अम्बेडकर का योगदान

Dr. Pooja Varun

Assistant Professor, Political Science, S.D. Govt. College, Beawar, Ajmer, Rajasthan, India

सार

भीमराव रामजी आम्बेडकर[a] (14 अप्रैल, 1891 – 6 दिसंबर, 1951), डॉ॰ बाबासाहब आम्बेडकर नाम से लोकप्रिय, भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाजसुधारक थे।[1] उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था।[2] वे स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माताओं में से एक थे।[3][4][5][6]

आम्बेडकर विपुल प्रतिभा के छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त कीं तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किये थे।[7] व्यावसायिक जीवन के आरम्भिक भाग में ये अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे एवं वकालत भी की तथा बाद का जीवन राजनीतिक गतिविधियों में अधिक बीता। इसके बाद आम्बेडकर भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार और चर्चाओं में शामिल हो गए और पत्रिकाओं को प्रकाशित करने, राजनीतिक अधिकारों की वकालत करने और दलितों के लिए सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत की और भारत के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।[8]

हिंदू पंथ में व्याप्त कुरूतियों और छुआछूत की प्रथा से तंग आकार सन 1951 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था। सन 1990 में, उन्हें भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। 14 अप्रैल को उनका जन्म दिवस आम्बेडकर जयंती के तौर पर भारत समेत दुनिया भर में मनाया जाता है।[9] डॉक्टर आम्बेडकर की विरासत में लोकप्रिय संस्कृति में कई स्मारक और चित्रण शामिल हैं।[10][11]

परिचय

अक्टूबर 1916 में, ये लंदन चले गये और वहाँ उन्होंने ग्रेज़ इन में बैरिस्टर कोर्स (विधि अध्ययन) के लिए प्रवेश लिया, और साथ ही लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में भी प्रवेश लिया जहां उन्होंने अर्थशास्त्र की डॉक्टरेट (Doctorate) थीसिस पर काम करना शुरू किया। जून 1917 में, विवश होकर उन्हें अपना अध्ययन अस्थायी तौरपर बीच में ही छोड़ कर भारत लौट आए क्योंकि बड़ौदा राज्य से उनकी छात्रवृत्ति समाप्त हो गई थी। लौटते समय उनके पुस्तक संग्रह को उस जहाज से अलग जहाज पर भेजा गया था जिसे जर्मन पनडुब्बी के टारपीडो द्वारा डुबो दिया गया। ये प्रथम विश्व युद्ध का काल था।[21] उन्हें चार साल के भीतर अपने थीसिस के लिए लंदन लौटने की अनुमति मिली। बड़ौदा राज्य के सेना सचिव के रूप में काम करते हुये अपने जीवन में अचानक फिर से आये भेदभाव से डॉ॰ भीमराव आम्बेडकर निराश हो गये और अपनी नौकरी छोड़ एक निजी ट्यूटर और लेखाकार के रूप में काम करने लगे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना परामर्श व्यवसाय भी आरम्भ किया जो उनकी सामाजिक स्थिति के कारण विफल रहा। अपने एक अंग्रेज जानकार मुंबई के पूर्व राज्यपाल लॉर्ड सिडनेम के कारण उन्हें मुंबई के सिडनेम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनोमिक्स मे राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर के रूप में नौकरी मिल गयी। १९२० में कोल्हापुर के शाहू महाराज, अपने पारसी मित्र के सहयोग और कुछ निजी बचत के सहयोग से वो एक बार फिर से इंग्लैंड वापस जाने में सफ़ल हो पाए तथा 1921 में विज्ञान स्नातकोत्तर (एम॰एससी॰) प्राप्त की, जिसके लिए उन्होंने 'प्रोवेन्शियल डीसेन्ट्रलाईज़ेशन ऑफ इम्पीरियल फायनेन्स इन ब्रिटिश इण्डिया' (ब्रिटिश भारत में शाही अर्थ व्यवस्था का प्रांतीय विकेंद्रीकरण) खोज ग्रन्थ प्रस्तुत किया था।[24][25][7] 1922 में, उन्हें ग्रेज इन ने बैरिस्टर-एट-लॉज डिग्री प्रदान की और उन्हें ब्रिटिश बार में बैरिस्टर के रूप में प्रवेश मिल गया। 1923 में, उन्होंने अर्थशास्त्र में डी॰एससी॰ (डॉक्टर ऑफ साईंस) उपाधि प्राप्त की। उनकी थीसिस "दी प्राब्लम आफ दि रुपी: इट्स ओरिजिन एंड इट्स सॉल्यूशन" (रुपये की समस्या: इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान) पर थी। लंदन का अध्ययन पूर्ण कर भारत वापस लौटते हुये भीमराव आम्बेडकर तीन महीने जर्मनी में रुके, जहाँ उन्होंने अपना अर्थशास्त्र का अध्ययन, बॉन विश्वविद्यालय में जारी रखा। किंतु समय की कमी से वे विश्वविद्यालय में अधिक नहीं ठहर सकें। उनकी तीसरी और चौथी डॉक्टरेट्स (एलएल॰डी॰, कोलंबिया विश्वविद्यालय, 1952 और डी॰लिट॰, उस्मानिया विश्वविद्यालय, 1953) सम्मानित उपाधियाँ थीं।[26]

आम्बेडकर ने कहा था "छुआछूत गुलामी से भी बदतर है।"[27] आम्बेडकर बड़ौदा के रियासत राज्य द्वारा शिक्षित थे, अतः उनकी सेवा करने के लिए बाध्य थे। उन्हें महाराजा गायकवाड़ का सैन्य सचिव नियुक्त किया गया, लेकिन जातिगत भेदभाव के कारण कुछ ही समय में उन्हें यह नौकरी छोड़नी पडी। उन्होंने इस घटना को अपनी आत्मकथा, वेटिंग फॉर अ वीजा में वर्णित किया।[28] इसके बाद, उन्होंने अपने बढ़ते परिवार के लिए जीविका साधन खोजने के पुनः प्रयास किये, जिसके लिये उन्होंने लेखाकार के रूप में, व एक निजी शिक्षक के रूप में भी काम किया, और एक निवेश परामर्श व्यवसाय की स्थापना की, किन्तु ये सभी प्रयास तब विफल हो गये जब उनके ग्राहकों ने जाना कि ये अछूत हैं।[29] 1918 में, ये मुंबई में सिडेनहम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स में राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बने। हालांकि वे छात्रों के साथ सफल रहे, फिर भी अन्य प्रोफेसरों ने उनके साथ पानी पीने के बर्तन साझा करने पर विरोध किया।[30]

भारत सरकार अधिनियम 1919, तैयार कर रही साउथबरो समिति के समक्ष, भारत के एक प्रमुख विद्वान के तौर पर आम्बेडकर को साक्ष्य देने के लिये आमंत्रित किया गया। इस सुनवाई के दौरान, आम्बेडकर ने दलितों और अन्य धार्मिक समुदायों के लिये पृथक निर्वाचिका और आरक्षण देने की वकालत की।[31] १९२० में, बंबई से, उन्होंने साप्ताहिक मूकनायक के प्रकाशन की शुरूआत की। यह प्रकाशन शीघ्र ही पाठकों मे लोकप्रिय हो गया, तब आम्बेडकर ने इसका प्रयोग रूढ़िवादी हिंदू राजनेताओं व जातीय भेदभाव से लड़ने के प्रति भारतीय राजनैतिक समुदाय की अनिच्छा की आलोचना करने के लिये किया। उनके दलित वर्ग के एक सम्मेलन के दौरान दिये गये भाषण ने कोल्हापुर राज्य के स्थानीय शासक शाहू चतुर्थ को बहुत प्रभावित किया, जिनका आम्बेडकर के साथ भोजन करना रूढ़िवादी समाज मे हलचल मचा गया।[32]

बॉम्बे उच्च न्यायालय में विधि का अभ्यास करते हुए, उन्होंने अछूतों की शिक्षा को बढ़ावा देने और उन्हें ऊपर उठाने के प्रयास किये। उनका पहला संगठित प्रयास केंद्रीय संस्थान बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना था, जिसका उद्देश्य शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक सुधार को बढ़ावा देने के साथ ही अवसादग्रस्त वर्गों के रूप में सन्दर्भित "बहिष्कार" के कल्याण करना था।[33] दलित अधिकारों की रक्षा के लिए, उन्होंने मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, प्रबुद्ध भारत और जनता जैसी पांच पत्रिकाएं निकालीं।[34]

सन 1925 में, उन्हें बंबई प्रेसीडेंसी समिति में सभी यूरोपीय सदस्यों वाले साइमन कमीशन में काम करने के लिए नियुक्त किया गया।[35] इस आयोग के विरोध में भारत भर में विरोध प्रदर्शन हुये। जहां इसकी रिपोर्ट को अधिकतर भारतीयों द्वारा अनदेखा कर दिया गया, आम्बेडकर ने अलग से भविष्य के संवैधानिक सुधारों के लिये सिफारिश लिखकर भेजीं।[36]

'जयस्तंभ', कोरेगाँव भिमा में डॉ॰ बाबासाहब आम्बेडकर एवं उनके अनुयायि, 1 जनवरी 1927

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के अन्तर्गत 1 जनवरी 1818 को हुई कोरेगाँव की लड़ाई के दौरान मारे गये भारतीय महार सैनिकों के सम्मान में आम्बेडकर ने 1 जनवरी 1927 को कोरेगाँव विजय स्मारक (जयस्तंभ) में एक समारोह आयोजित किया। यहाँ महार समुदाय से संबंधित सैनिकों के नाम संगमरमर के एक शिलालेख पर खुदवाये गये तथा कोरेगाँव को दलित स्वाभिमान का प्रतीक बनाया।[37]

सन 1927 तक, डॉ॰ आम्बेडकर ने छुआछूत के विरुद्ध एक व्यापक एवं सक्रिय आंदोलन आरम्भ करने का निर्णय किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलनों, सत्याग्रहों और जलूसों के द्वारा, पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी वर्गों के लिये खुलवाने के साथ ही उन्होनें अछूतों को भी हिंदू मन्दिरों में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष किया। उन्होंने महाड शहर में अछूत समुदाय को भी नगर की चवदार जलाशय से पानी लेने का अधिकार दिलाने कि लिये सत्याग्रह चलाया।[38] 1927 के अंत में सम्मेलन में, आम्बेडकर ने जाति भेदभाव और "छुआछूत" को वैचारिक रूप से न्यायसंगत बनाने के लिए, प्राचीन हिंदू पाठ, मनुस्मृति, जिसके कई पद, खुलकर जातीय भेदभाव व जातिवाद का समर्थन करते हैं,[39] की सार्वजनिक रूप से निंदा की, और उन्होंने औपचारिक रूप से प्राचीन पाठ की प्रतियां जलाईं।[40] 25 दिसंबर 1927 को, उन्होंने हजारों अनुयायियों के नेतृत्व में मनुस्मृति की प्रतियों को जलाया।[41][42][43] इसकी स्मृति में प्रतिवर्ष 25 दिसंबर को मनुस्मृति दहन दिवस के रूप में आम्बेडकरवादियों और हिंदू दलितों द्वारा मनाया जाता है।[44][45]

1930 में, आम्बेडकर ने तीन महीने की तैयारी के बाद कालाराम मन्दिर सत्याग्रह आरम्भ किया। कालाराम मन्दिर आंदोलन में लगभग 15,000 स्वयंसेवक इकट्ठे हुए, जिससे नाशिक की सबसे बड़ी प्रक्रियाएं हुईं। जुलूस का नेतृत्व एक सैन्य बैंड ने किया था, स्काउट्स का एक बैच, महिलाएं और पुरुष पहली बार भगवान को देखने के लिए अनुशासन, आदेश और दृढ़ संकल्प में चले गए थे। जब वे द्वार तक पहुँचे, तो द्वार ब्राह्मण अधिकारियों द्वारा बंद कर दिए गए।[46]

विचार-विमर्श

10-12 साल हिन्दू धर्म के अन्तर्गत रहते हुए बाबासाहब आम्बेडकर ने हिन्दू धर्म तथा हिन्दु समाज को सुधारने, समता तथा सम्मान प्राप्त करने के लिए तमाम प्रयत्न किए, परन्तु सवर्ण हिन्दुओं का हृदय परिवर्तन न हुआ। उल्टे उन्हें निंदित किया गया और हिन्दू धर्म विनाशक तक कहा गया। उसके बाद उन्होंने कहा था की, “हमने हिन्दू समाज में समानता का स्तर प्राप्त करने के लिए हर तरह के प्रयत्न और सत्याग्रह किए, परन्तु सब निरर्थक सिद्ध हुए। हिन्दू समाज में समानता के लिए कोई स्थान नहीं है।” हिन्दू समाज का यह

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

कहना था कि “मनुष्य धर्म के लिए हैं” जबकि आम्बेडकर का मानना था कि "धर्म मनुष्य के लिए हैं।" आम्बेडकर ने कहा कि ऐसे धर्म का कोई मतलब नहीं जिसमें मनुष्यता का कुछ भी मूल्य नहीं। जो अपने ही धर्म के अनुयायिओं (अछूतों को) को धर्म शिक्षा प्राप्त नहीं करने देता, नौकरी करने में बाधा पहुँचाता है, बात-बात पर अपमानित करता है और यहाँ तक कि पानी तक नहीं मिलने देता ऐसे धर्म में रहने का कोई मतलब नहीं। आम्बेडकर ने हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा किसी भी प्रकार की दुश्मनी व हिन्दू धर्म के विनाश के लिए नहीं की थी बल्कि उन्होंने इसका फैसला कुछ मौलिक सिद्धांतों को लेकर किया जिनका हिन्दू धर्म में बिल्कुल तालमेल नहीं था।[78]

13 अक्टूबर 1935 को नासिक के निकट येवला में एक सम्मेलन में बोलते हुए आम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन करने की घोषणा की,

"हालांकि मैं एक अछूत हिन्दू के रूप में पैदा हुआ हूँ, लेकिन मैं एक हिन्दू के रूप में हरगिज नहीं मरूँगा!"

उन्होंने अपने अनुयायियों से भी हिंदू धर्म छोड़ कोई और धर्म अपनाने का आह्वान किया।[79] उन्होंने अपनी इस बात को भारत भर में कई सार्वजनिक सभाओं में भी दोहराया। इस धर्म-परिवर्तन की घोषणा के बाद हैदराबाद के इस्लाम धर्म के निज़ाम से लेकर कई ईसाई मिशनरियों ने उन्हें करोड़ों रुपये का प्रलोभन भी दिया पर उन्होनें सभी को ठुकरा दिया। निःसन्देह वो भी चाहते थे कि दलित समाज की आर्थिक स्थिति में सुधार हो, पर पराए धन पर आश्रित होकर नहीं बल्कि उनके परिश्रम और संगठन होने से स्थिति में सुधार आए। इसके अलावा आम्बेडकर ऐसे धर्म को चुनना चाहते थे जिसका केन्द्र मनुष्य और नैतिकता हो, उसमें स्वतंत्रता, समता तथा बंधुत्व हो। वो किसी भी हाल में ऐसे धर्म को नहीं अपनाना चाहते थे जो वर्णभेद तथा छुआछूत की बीमारी से जकड़ा हो और ना ही वो ऐसा धर्म चुनना चाहते थे जिसमें अंधविश्वास तथा पाखंडवाद हो।[56] 21 मार्च, 1936 के ‘हरिजन’ में गाँधी ने लिखा की, 'जबसे डॉक्टर आम्बेडकर ने धर्म-परिवर्तन की धमकी का बमगोला हिन्दू समाज में फेंका है, उन्हें अपने निश्चय से डिगाने की हरचन्द कोशिशें की जा रही हैं.' यहीं गाँधी जी आगे एक जगह लिखते हैं, 'हां ऐसे समय में (सवर्ण) सुधारकों को अपना हृदय टटोलना जरूरी है। उसे सोचना चाहिए कि कहीं मेरे या मेरे पड़ोसियों के व्यवहार से दुखी होकर तो ऐसा नहीं किया जा रहा है। ...यह तो एक मानी हुई बात है कि अपने को सनातनी कहने वाले हिन्दुओं की एक बड़ी संख्या का व्यवहार ऐसा है जिससे देशभर के हरिजनों को अत्यधिक असुविधा और खीज होती है। आश्चर्य यही है कि इतने ही हिन्दुओं ने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा, और दूसरों ने भी क्यों नहीं छोड़ दिया? यह तो उनकी प्रशंसनीय वफादारी या हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता ही है जो उसी धर्म के नाम पर इतनी निर्दयता होते हुए भी लाखों हरिजन उसमें बने हुए हैं।'[80]

आम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन की घोषणा करने के बाद 21 वर्ष तक के समय के बीच उन्होंने ने विश्व के सभी प्रमुख धर्मों का गहन अध्ययन किया। उनके द्वारा इतना लंबा समय लेने का मुख्य कारण यह भी था कि वो चाहते थे कि जिस समय वो धर्म परिवर्तन करें उनके साथ ज्यादा से ज्यादा उनके अनुयायी धर्मान्तरण करें। आम्बेडकर बौद्ध धर्म को पसन्द करते थे क्योंकि उसमें तीन सिद्धांतों का समन्वित रूप मिलता है जो किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। बौद्ध धर्म प्रज्ञा (अंधविश्वास तथा अतिप्रकृतिवाद के स्थान पर बुद्धि का प्रयोग), करुणा (प्रेम) और समता (समानता) की शिक्षा देता है। उनका कहना था कि मनुष्य इन्हीं बातों को शुभ तथा आनंदित जीवन के लिए चाहता है। देवता और आत्मा समाज को नहीं बचा सकते। आम्बेडकर के अनुसार सच्चा धर्म वो ही है जिसका केन्द्र मनुष्य तथा नैतिकता हो, विज्ञान अथवा बौद्धिक तत्व पर आधारित हो, न कि धर्म का केन्द्र ईश्वर, आत्मा की मुक्ति और मोक्ष। साथ ही उनका कहना था धर्म का कार्य विश्व का पुनर्निर्माण करना होना चाहिए ना कि उसकी उत्पत्ति और अंत की व्याख्या करना। वह जनतांत्रिक समाज व्यवस्था के पक्षधर थे, क्योंकि उनका मानना था ऐसी स्थिति में धर्म मानव जीवन का मार्गदर्शक बन सकता है। ये सब बातें उन्हें एकमात्र बौद्ध धर्म में मिलीं।[81]

गाँधी व कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद आम्बेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेत्ता की थी। जिसके कारण जब, 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व में आई तो उसने आम्बेडकर को देश के पहले क़ानून एवं न्याय मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त 1947 को, आम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। संविधान निर्माण के कार्य में आम्बेडकर का शुरुआती बौद्ध संघ रीतियों और अन्य बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन भी काम आया।[82]

आम्बेडकर एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ थे, उन्होंने लगभग 60 देशों के संविधानों का अध्ययन किया था। आम्बेडकर को "भारत के संविधान का पिता" के रूप में मान्यता प्राप्त है।[83][84] संविधान सभा में, मसौदा समिति के सदस्य टी॰ टी॰ कृष्णामाचारी ने कहा:

"अध्यक्ष महोदय, मैं सदन में उन लोगों में से एक हूं, जिन्होंने डॉ॰ आम्बेडकर की बात को बहुत ध्यान से सुना है। मैं इस संविधान की ड्राफ्टिंग के काम में जुटे काम और उत्साह के बारे में जानता हूं।" उसी समय, मुझे यह महसूस होता है कि इस समय हमारे लिए जितना महत्वपूर्ण संविधान तैयार करने के उद्देश्य से ध्यान देना आवश्यक था, वह ड्राफ्टिंग कमेटी द्वारा नहीं दिया गया। सदन को शायद सात सदस्यों की जानकारी है। आपके द्वारा नामित, एक ने सदन से इस्तीफा दे दिया था और उसे बदल दिया गया था। एक की मृत्यु हो गई थी और उसकी जगह कोई नहीं लिया गया था। एक अमेरिका में था और उसका स्थान नहीं भरा गया और एक अन्य व्यक्ति राज्य के मामलों में व्यस्त था, और उस सीमा तक एक शून्य था। एक या दो लोग दिल्ली से बहुत दूर थे और शायद स्वास्थ्य के कारणों ने उन्हें भाग लेने की अनुमति नहीं दी। इसलिए अंततः यह हुआ कि इस संविधान का मसौदा तैयार करने का

सारा भार डॉ॰ आम्बेडकर पर पड़ा और मुझे कोई संदेह नहीं है कि हम उनके लिए आभारी हैं। इस कार्य को प्राप्त करने के बाद मैं ऐसा मानता हूँ कि यह निस्संदेह सराहनीय है।"[85][86]

ग्रैनविले ऑस्टिन ने 'पहला और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज' के रूप में आम्बेडकर द्वारा तैयार भारतीय संविधान का वर्णन किया। 'भारत के अधिकांश संवैधानिक प्रावधान या तो सामाजिक क्रांति के उद्देश्य को आगे बढ़ाने या इसकी उपलब्धि के लिए जरूरी स्थितियों की स्थापना करके इस क्रांति को बढ़ावा देने के प्रयास में सीधे पहुँचे हैं।'[87]

आम्बेडकर द्वारा तैयार किए गए संविधान के पाठ में व्यक्तिगत नागरिकों के लिए नागरिक स्वतंत्रता की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए संवैधानिक गारंटी और सुरक्षा प्रदान की गई है, जिसमें धर्म की आजादी, छुआछूत को खत्म करना, और भेदभाव के सभी रूपों का उल्लंघन करना शामिल है। आम्बेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के लिए तर्क दिया, और अनुसूचित जातियों (एससी) और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के सदस्यों के लिए नागरिक सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों में नौकरियों के आरक्षण की व्यवस्था शुरू करने के लिए असेंबली का समर्थन जीता, जो कि सकारात्मक कार्रवाई थी।[88] भारत के सांसदों ने इन उपायों के माध्यम से भारत की निराशाजनक कक्षाओं के लिए सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और अवसरों की कमी को खत्म करने की उम्मीद की।[89] संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर 1949 को संविधान अपनाया गया था।[90] अपने काम को पूरा करने के बाद, बोलते हुए, आम्बेडकर ने कहा:

मैं महसूस करता हूं कि संविधान, साध्य (काम करने लायक) है, यह लचीला है पर साथ ही यह इतना मज़बूत भी है कि देश को शांति और युद्ध दोनों के समय जोड़ कर रख सके। वास्तव में, मैं कह सकता हूँ कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नही होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था।

परिणाम

आम्बेडकर ने भारत के संविधान के अनुच्छेद 370 का विरोध किया, जिसने जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा दिया, और जिसे उनकी इच्छाओं के ख़िलाफ़ संविधान में शामिल किया गया था। बलराज माधोक ने कहा था कि, आम्बेडकर ने कश्मीरी नेता शेख अब्दुल्ला को स्पष्ट रूप से बताया था: "आप चाहते हैं कि भारत को आपकी सीमाओं की रक्षा करनी चाहिए, उसे आपके क्षेत्र में सड़कों का निर्माण करना चाहिए, उसे आपको अनाज की आपूर्ति करनी चाहिए, और कश्मीर को भारत के समान दर्जा देना चाहिए। लेकिन भारत सरकार के पास केवल सीमित शक्तियां होनी चाहिए और भारतीय लोगों को कश्मीर में कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। इस प्रस्ताव को सहमति देने के लिए, मैं भारत के कानून मंत्री के रूप में भारत के हितों के खिलाफ एक विश्वासघाती बात होंगी, यह कभी नहीं करेगा। "फिर अब्दुल्ला ने नेहरू से संपर्क किया, जिन्होंने उन्हें गोपाल स्वामी अयंगार को निर्देशित किया, जिन्होंने बदले में वल्लभभाई पटेल से संपर्क किया और कहा कि नेहरू ने स्के का वादा किया था। अब्दुल्ला विशेष स्थिति। पटेल द्वारा अनुच्छेद पारित किया गया, जबकि नेहरू एक विदेश दौरे पर थे। जिस दिन लेख चर्चा के लिए आया था, आम्बेडकर ने इस पर सवालों का जवाब नहीं दिया लेकिन अन्य लेखों पर भाग लिया। सभी तर्क कृष्णा स्वामी अयंगार द्वारा किए गए थे।[91][92][93]

आम्बेडकर वास्तव में समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे और कश्मीर के मामले में धारा 370 का विरोध करते थे। आम्बेडकर का भारत आधुनिक, वैज्ञानिक सोच और तर्कसंगत विचारों का देश होता, उसमें पर्सनल कानून की जगह नहीं होती।[95] संविधान सभा में बहस के दौरान, आम्बेडकर ने एक समान नागरिक संहिता को अपनाने की सिफारिश करके भारतीय समाज में सुधार करने की अपनी इच्छा प्रकट कि।[96][97] 1951 मे संसद में अपने हिन्दू कोड बिल (हिंदू संहिता विधेयक) के मसौदे को रोके जाने के बाद आम्बेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। हिंदू कोड बिल द्वारा भारतीय महिलाओं को कई अधिकारों प्रदान करने की बात कहीं गई थी। इस मसौदे में उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गयी थी।[98] हालांकि प्रधानमंत्री नेहरू, कैबिनेट और कुछ अन्य कांग्रेसी नेताओं ने इसका समर्थन किया पर राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद एवं वल्लभभाई पटेल समेत संसद सदस्यों की एक बड़ी संख्या इसके ख़िलाफ़ थी। आम्बेडकर ने 1952 में बॉम्बे (उत्तर मध्य) निर्वाचन क्षेत्र में लोक सभा का चुनाव एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लड़ा पर वह हार गये। इस चुनाव में आम्बेडकर को 123,576 वोट तथा नारायण सडोबा काजोलकर को 138,137 वोटों का मतदान किया गया था।[99][100][101] मार्च 1952 में उन्हें संसद के ऊपरी सदन यानि राज्य सभा के लिए नियुक्त किया गया और इसके बाद उनकी मृत्यु तक वो इस सदन के सदस्य रहे।[102]

निष्कर्ष

आम्बेडकर विदेश से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री लेने वाले पहले भारतीय थे।[103] उन्होंने तर्क दिया कि औद्योगिकीकरण और कृषि विकास से भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि हो सकती है।[104] उन्होंने भारत में प्राथमिक उद्योग के रूप में कृषि में निवेश पर बल दिया। शरद पवार के अनुसार, आम्बेडकर के दर्शन ने सरकार को अपने खाद्य सुरक्षा लक्ष्य हासिल करने में मदद की।[105] आम्बेडकर ने राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक विकास की वकालत की, शिक्षा, सार्वजनिक स्वच्छता, समुदाय स्वास्थ्य, आवासीय सुविधाओं को बुनियादी सुविधाओं के रूप में जोर दिया।[104] उन्होंने ब्रिटिश शासन की वजह से हुए विकास के नुकसान की गणना की।[106] आम्बेडकर को एक अर्थशास्त्री के तौर पर प्रशिक्षित किया गया था, और 1921 तक एक पेशेवर अर्थशास्त्री बन चूके थे। जब वह एक राजनीतिक नेता बन गए तो उन्होंने अर्थशास्त्र पर तीन विद्वत्वापूर्ण पुस्तकें लिखीं:

- अॅडमिनिस्ट्रेशन अँड फायनान्स ऑफ दी इस्ट इंडिया कंपनी
- द इव्हॅल्युएशन ऑफ प्रॉव्हिन्शियल फायनान्स इन् ब्रिटिश इंडिआ
- द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी : इट्स ओरिजिन अॅन्ड इट्स सोल्युशन[107][108][109]

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई), आम्बेडकर के विचारों पर आधारित था, जो उन्होंने हिल्टन यंग कमिशन को प्रस्तुत किये थे।[107][109][110][111]

"आम्बेडकरवाद" आम्बेडकर की विचारधारा तथा दर्शन हैं। स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, बौद्ध धर्म, विज्ञानवाद, मानवतावाद, सत्य, अहिंसा आदि के विषय आम्बेडकरवाद के सिद्धान्त हैं। छुआछूत को नष्ट करना, दलितों में सामाजिक सुधार, भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रचार, भारतीय संविधान में निहीत अधिकारों तथा मौलिक हकों की रक्षा करना, एक नैतिक तथा जातिमुक्त समाज की रचना और भारत देश प्रगती यह प्रमुख उद्देश शामिल हैं। आम्बेडकरवाद सामाजिक, राजनितीक तथा धार्मिक विचारधारा हैं।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "BR Ambedkar's anniversary: His quotes on gender, politics and untouchability". 6 दिस 2017. मूल से 23 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
2. ↑ "Rescuing Ambedkar from pure Dalitism: He would've been India's best Prime Minister". Firstpost. मूल से 25 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
3. ↑ "Do we really respect Dr Ambedkar or is it mere lip service?". DNA India. 6 दिस॰ 2014. मूल से 17 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
4. ↑ "Ambedkar in Modi's quiver, says Gandhis insulted father of Indian Constitution". Deccan Chronicle. 15 अप्रैल 2014. मूल से 16 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
5. ↑ "Home for Ambedkar 'house' - Maharashtra to buy UK bungalow where Dalit icon lived". www.telegraphindia.com. मूल से 5 नवंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
6. ↑ Desk, FPJ Web (11 अप्रैल 2016). "Milestones achieved by Dr. Babasaheb Ambedkar". मूल से 6 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
7. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ "Archives released by LSE reveal BR Ambedkar's time as a scholar". https://www.hindustantimes.com/. 9 फ़र॰ 2016. मूल से 23 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद); `|website=` में बाहरी कड़ी (मदद)
8. ↑ "Zee जानकारी : किसने रची थी डॉ॰ आम्बेडकर के बारे में भ्रम फैलाने की साजिश". Zee News Hindi. 15 अप्रैल 2016. मूल से 8 जनवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
9. ↑ http://ccis.nic.in/WriteReadData/CircularPortal/D2/D02est/12_6_2015_JCA-2-19032015.pdf Archived 2015-04-05 at the Wayback Machine Ambedkar Jayanti from ccis.nic.in on 19th March 2015
10. ↑ Ghildiyal, Subodh (29 मई 2018). "Bhimrao Ambedkar cult spreading across world". मूल से 20 जुलाई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2019 – वाया The Economic Times.
11. ↑ "Bhim: Cult of Bhim spreading across world | India News - Times of India". The Times of India. मूल से 3 अगस्त 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2019.
12. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr. Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: Columbia University Press. पृ॰ 2. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 0-231-13602-1.
13. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1890s" (PHP). मूल से 7 सितंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
14. ↑ Menon, Dilip M. "What's in a name?: Those who invoke Ambedkar are complicit in a forgetting, much like Gandhi". Scroll.in. मूल से 13 अगस्त 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
15. ↑ "Mahar". Encyclopædia Britannica. britannica.com. मूल से 30 नवम्बर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2012.
16. ↑ Ahuja, M. L. (2007). "Babasaheb Ambedkar". Eminent Indians : administrators and political thinkers. New Delhi: Rupa. पपृ॰ 1922–1923. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 8129111071. मूल से 23 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 जुलाई 2013.

17. ↑ "आम्बेडकर गुरुजींचं कुटुंब जपतंय सामाजिक वसा, कुटुंबानं सांभाळल्या 'त्या' आठवणी". divyamarathi. 26 दिस॰ 2016. मूल से 28 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
18. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1900s" (PHP). मूल से 6 जनवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जनवरी 2012.
19. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1900s" (PHP). मूल से 6 जनवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
20. ↑ "आधुनिक शिक्षा के हिमायती डॉ॰ भीमराव आम्बेडकर". Prabhat Khabar - Hindi News. अभिगमन तिथि 2020-12-06.
21. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1910s" (PHP). मूल से 23 नवम्बर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जनवरी 2012.
22. ↑ "Bhimrao Ambedkar". columbia.edu. मूल से 10 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 अक्टूबर 2009.
23. ↑ "txt_zelliot1991". www.columbia.edu. मूल से 3 नवंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
24. ↑ Ambedkar, B. R. (25 अप्रैल 1921). "Provincial Decentralization of Imperial Finance in British India". University of London. मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019 – वाया Google Books.
25. ↑ "London School of Economics releases BR Ambedkar archives". DNA India. 9 फ़र॰ 2016. मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
26. ↑ Kshīrasāgara, Rāmacandra (1 January 1994). "Dalit Movement in India and Its Leaders, 1857-1956". M.D. Publications Pvt. Ltd. मूल से 31 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 November 2016 – वाया Google Books.
27. ↑ संवाददाता, सौतिक बिस्वास बीबीसी. "'दलित मुसलमानों के घर न जाते हैं, न खाते हैं'". BBC News हिंदी. मूल से 18 सितंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
28. ↑ Ambedkar, Dr. B.R. "Waiting for a Visa". columbia.edu. Columbia University. मूल से 24 जून 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 एप्रिल 2015.
29. ↑ Keer, Dhananjay (1971) [1954]. Dr. Ambedkar: Life and Mission. Mumbai: Popular Prakashan. पपृ॰ 37–38. OCLC 123913369. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 8171542379.
30. ↑ Harris, Ian (संपा॰). Buddhism and politics in twentieth-century Asia. Continuum International Group.
31. ↑ Tejani, Shabnum (2008). "From Untouchable to Hindu Gandhi, Ambedkar and Depressed class question 1932". Indian secularism : a social and intellectual history, 1890-1950. Bloomington, Ind.: Indiana University Press. पपृ॰ 205–210. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 0253220440. अभिगमन तिथि 17 July 2013.
32. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पृ॰ 4. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 1850654492.
33. ↑ "Dr. Ambedkar". National Campaign on Dalit Human Rights. मूल से 8 अक्टूबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2012.
34. ↑ Benjamin, Joseph (जून 2009). "B. R. Ambedkar: An Indefatigable Defender of Human Rights". Focus. Japan: Asia-Pacific Human Rights Information Center (HURIGHTS OSAKA). 56.
35. ↑ Thorat, Sukhadeo; Kumar, Narender (2008). B. R. Ambedkar:perspectives on social exclusion and inclusive policies. New Delhi: Oxford University Press.
36. ↑ Ambedkar, B. R. (1979). Writings and Speeches. 1. Education Dept., Govt. of Maharashtra.
37. ↑ वागले, निखिल (8 जन॰ 2018). "आम्बेडकर ने कोरेगांव को दलित स्वाभिमान का प्रतीक बनाया?". मूल से 19 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019 – वाया www.bbc.com. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
38. ↑ "Dr. Babasaheb Ambedkar". Maharashtra Navanirman Sena. मूल से 10 मई 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 दिसंबर 2010.
39. ↑ "मनुस्मृति-ब्रिटैनिका विश्वकोश". www.britannica.com. ब्रिटैनिका विश्वकोश. मूल से 12 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २३ जून २०१८.
40. ↑ लिए, एम राजीव लोचन बीबीसी हिंदी डॉट कॉम के. "भारत में कैसे बढ़ा 'मनुस्मृति' का महत्व". BBC News हिंदी. मूल से 25 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.

41. ↑ विचारक, चंद्रभान प्रसाद दलित. "'क्या मनुस्मृति दहन दिन मनाएगा संघ?'". BBC News हिंदी. मूल से 28 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
42. ↑ Kumar, Aishwary. "The Lies Of Manu". outlookindia.com. मूल से 18 अक्टूबर 2015 को पुरालेखित.
43. ↑ "Annihilating caste". frontline.in. मूल से 28 मई 2014 को पुरालेखित.
44. ↑ Menon, Nivedita (25 December 2014). "Meanwhile, for Dalits and Ambedkarites in India, December 25th is Manusmriti Dahan Din, the day on which B R Ambedkar publicly and ceremoniously in 1927". Kafila. मूल से 24 सितंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 October 2015.
45. ↑ "11. Manusmriti Dahan Day celebrated as Indian Women's Liberation Day" (PDF). मूल से 17 नवम्बर 2015 को पुरालेखित (PDF).
46. ↑ Keer, Dhananjay (1990). Dr. Ambedkar : life and mission (3rd संस्करण). Bombay: Popular Prakashan Private Limited. पपृ॰ 136–140. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 8171542379.
47. ↑ Kothari, R. (2004). Caste in Indian Politics. Orient Blackswan. पृ॰ 46. ISBN 81-250-0637-0, ISBN 978-81-250-0637-4.
48. ↑ Pritchett. "Rajah, Rao Bahadur M. C." University of Columbia. मूल से 30 जून 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जनवरी 2009.
49. ↑ DelhiSeptember 24, India Today Web Desk New; September 24, 2016UPDATED:; Ist, 2016 13:15. "Poona Pact: Mahatma Gandhi's fight against untouchability". India Today. मूल से 9 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
50. ↑ "पुणे करााचा बाबासाहेबांनीच केला होता धिक्कार". Lokmat. 25 सित॰ 2015. मूल से 12 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
51. ↑ Khairmode, Changdev Bhawanrao (1985). Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (Vol. 7) (Marathi में). Mumbai: Maharashtra Rajya Sahilya Sanskruti Mandal, Matralaya. पृ॰ 273.
52. ↑ "13A. Dr. Ambedkar in the Bombay Legislature PART I". मूल से 2 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 सितंबर 2019.
53. ↑ Kumar, Raj (9 August 2008). "Ambedkar and His Writings: A Look for the New Generation". Gyan Publishing House – वाया Google Books.
54. ↑ http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00ambedkar/timeline/1920s.html Archived 2018-12-17 at the Wayback Machine>
55. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 30 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जुलाई 2018.
56. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1930s" (PHP). मूल से 6 सितंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
57. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पपृ॰ 76–77. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 1850654492.
58. ↑ Khairmode, Changdev Bhawanrao (1985). Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (Vol. 7) (Marathi में). Mumbai: Maharashtra Rajya Sahilya Sanskruti Mandal, Matralaya. पृ॰ 245.
59. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पपृ॰ 76–77. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1850654490.
60. ↑ "May 15: It was 79 years ago today that Ambedkar's 'Annihilation Of Caste' was published". मूल से 29 मई 2016 को पुरालेखित.
61. ↑ Mungekar, Bhalchandra (16–29 जुलाई 2011). "Annihilating caste". Frontline. 28 (11). मूल से 1 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जुलाई 2013.
62. ↑ Deb, Siddhartha, "Arundhati Roy, the Not-So-Reluctant Renegade" Archived 6 जुलाई 2017 at the Wayback Machine, New York Times Magazine, 5 March 2014. Retrieved 5 March 2014.
63. ↑ कोठारी, उर्विश (7 दिस॰ 2018). "गाँधी को क्या वाक़ई ग़लत आंकते थे आम्बेडकर?". मूल से 14 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 मई 2019 – वाया www.bbc.com. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
64. ↑ "A for Ambedkar: As Gujarat's freedom march nears tryst, an assertive Dalit culture spreads". मूल से 16 सितम्बर 2016 को पुरालेखित.
65. ↑ Sadangi, Himansu Charan (13 August 2008). "Emancipation of Dalits and Freedom Struggle". Gyan Publishing House – वाया Google Books.

66. ↑ Keer, Dhananjay (13 August 1971). "Dr. Ambedkar: Life and Mission". Popular Prakashan – वाया Google Books.
67. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पृ॰ 5. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 1850654492.
68. ↑ "इतिहास के पन्नों से : भारत में दलाई लामा, अंबेडकर को भारत रत्न". BBC News हिंदी. मूल से 8 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
69. ↑ Sialkoti, Zulfiqar Ali (2014), "An Analytical Study of the Punjab Boundary Line Issue during the Last Two Decades of the British Raj until the Declaration of 3 June 1947" (PDF), Pakistan Journal of History and Culture, XXXV (2): 73–76, मूल (PDF) से 2 एप्रिल 2018 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 3 अगस्त 2018
70. ↑ Dhulipala, Venkat (2015), Creating a New Medina, Cambridge University Press, पपृ॰ 124, , 134, , 142–144, , 149, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-107-05212-3
71. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1940s" (PHP). मूल से 23 जून 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
72. ↑ "Attention BJP: When the Muslim League rescued Ambedkar from the 'dustbin of history'". Firstpost. 15 एप्रिल 2015. मूल से 20 सितम्बर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 सितम्बर 2015.
73. ↑ "Alphabetical List Of Former Members Of Rajya Sabha Since 1952". Rajya Sabha Secretariat, New Delhi. मूल से 14 फ़रवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 March 2019.
74. ↑ Khobragade, Fulchand (2014). Suryaputra Yashwantrao Ambedkar (Marathi में). Nagpur: Sanket Prakashan. पपृ॰ 20, 21.
75. ↑ "'प्राचीन काल में हिन्दू गोमांस खाते थे'". BBC News हिंदी. मूल से 28 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
76. ↑ Ambedkar, Bhimrao Ramji (1946). "Chapter X: Social Stagnation". Pakistan or the Partition of India. Bombay: Thackers Publishers. पपृ॰ 215–219. मूल से 12 सितम्बर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 अक्टूबर 2009.
77. ↑ साहा, अभिमन्यु कुमार (6 दिस॰ 2017). "मुसलमान क्यों नहीं बने थे अंबेडकर?". मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019 – वाया www.bbc.com. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
78. ↑ "डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा?". Navbharat Times Reader's Blog. 26 जून 2015. मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
79. ↑ "हिन्दू धर्म छोड़कर क्यों बौद्ध धर्म के हुए अम्बेडकर?". www.navodayatimes.in. 14 अक्तू॰ 2017. मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. `|date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
80. ↑ "बाबासाहेब और महात्मा : एक लंबे अरसे तक गाँधी को पता ही नहीं था कि अंबेडकर खुद 'अछूत' हैं!". Satyagrah. मूल से 15 जुलाई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 जुलाई 2019.
81. ↑ "इसलिए बाबा अंबेडकर ने लाखों दलितों के साथ अपनाया था बौद्ध धर्म!". https://m.aajtak.in. मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. `|website=` में बाहरी कड़ी (मदद)
82. ↑ "Some Facts of Constituent Assembly". Parliament of India. National Informatics Centre. मूल से 11 May 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 April 2011. On 29 August 1947, the Constituent Assembly set up an Drafting Committee under the Chairmanship of B. R. Ambedkar to prepare a Draft Constitution for India
83. ↑ Laxmikanth, M. "INDIAN POLITY". McGraw-Hill Education. मूल से 31 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019 – वाया Google Books.
84. ↑ DelhiNovember 26, India Today Web Desk New; November 26, 2018UPDATED:; Ist, 2018 15:31. "Constitution Day: A look at Dr BR Ambedkar's contribution towards Indian Constitution". India Today. मूल से 31 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019.
85. ↑ "Denying Ambedkar his due". 14 June 2016. मूल से 31 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019.
86. ↑ "Constituent Assembly of India Debates". 164.100.47.194. मूल से 7 जनवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019.
87. ↑ Austin, Granville (1999), The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation, Oxford University Press

88. ↑ "Constituent Assembly Debates Clause wise Discussion on the Draft Constitution 15th November 1948 to 8th January 1949". मूल से 24 मई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2012.
89. ↑ Sheth, D. L. (नवम्बर 1987). "Reservations Policy Revisited". Economic and Political Weekly. 22: 1957–1962. JSTOR 4377730.
90. ↑ "Constitution of India". Ministry of Law and Justice of India. मूल से 22 अक्टूबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 अक्टूबर 2013.
91. ↑ amanadas, Dr. K. "Kashmir Problem From Ambedkarite Perspective". ambedkar.org. मूल से 4 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 सितम्बर 2013.
92. ↑ Sehgal, Narender (1994). "Chapter 26: Article 370". Converted Kashmir: Memorial of Mistakes. Delhi: Utpal Publications. मूल से 5 सितम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 सितम्बर 2013.
93. ↑ Tilak. "Why Ambedkar refused to draft Article 370". Indymedia India. मूल से 7 February 2004 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 September 2013.
94. ↑ "Ambedkar with UCC". Outlook India. मूल से 14 अप्रैल 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 August 2013.
95. ↑ "One nation one code: How Ambedkar and others pushed for a uniform code before Partition | India News - Times of India". The Times of India. मूल से 4 फ़रवरी 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
96. ↑ "Ambedkar And The Uniform Civil Code". मूल से 14 एप्रिल 2016 को पुरालेखित.
97. ↑ "Ambedkar favoured common civil code". मूल से 28 नवम्बर 2016 को पुरालेखित.
98. ↑ Chandrababu, B. S; Thilagavathi, L (2009). Woman, Her History and Her Struggle for Emancipation. Chennai: Bharathi Puthakalayam. पपृ॰ 297–298. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 8189909975.
99. ↑ Dalmia, Vasudha; Sadana, Rashmi, संपा॰ (2012). "The Politics of Caste Identity". The Cambridge Companion to Modern Indian Culture. Cambridge Companions to Culture (illustrated संस्करण). Cambridge University Press. पृ॰ 93. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 0521516250.
100. ↑ Guha, Ramachandra (2008). India After Gandhi: The History of the World's Largest Democracy. पृ॰ 156. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-06-095858-9.
101. ↑ "Statistical Report On General Elections, 1951 to The First Lok Sabha: List of Successful Candidates" (PDF). Election Commission of India. पपृ॰ 83, 12. मूल (PDF) से 8 October 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 June 2014.
102. ↑ Sabha, Rajya. "Alphabetical List of All Members of Rajya Sabha Since 1952". Rajya Sabha Secretariat. मूल से 9 जनवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 जुलाई 2018. Serial Number 69 in the list
103. ↑ IEA. "Dr. B.R. Ambedkar's Economic and Social Thoughts and Their Contemporary Relevance". IEA Newsletter – The Indian Economic Association(IEA) (PDF). India: IEA publications. पृ॰ 10. मूल (PDF) से 16 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 एप्रिल 2018.
104. ↑ Mishra, edited by S.N. (2010). Socio-economic and political vision of Dr. B.R. Ambedkar. New Delhi: Concept Publishing Company. पपृ॰ 173–174. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 818069674X. मूल से 23 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 अप्रैल 2018.
105. ↑ TNN (15 अक्टूबर 2013). "'Ambedkar had a vision for food self-sufficiency'". The Times of India. मूल से 17 अक्टूबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अक्टूबर 2013.
106. ↑ Zelliot, Eleanor (1991). "Dr. Ambedkar and America". A talk at the Columbia University Ambedkar Centenary. मूल से 3 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अक्टूबर 2013.
107. ↑ (PDF) http://www.aygrt.net/publishArticles/651.pdf. अभिगमन तिथि 28 November 2012. गायब अथवा खाली `|title=` (मदद)[मृत कड़ियाँ]
108. ↑ "Archived copy" (PDF). मूल (PDF) से 2 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 नवम्बर 2012.
109. ↑ "Archived copy" (PDF). मूल (PDF) से 28 फ़रवरी 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 नवम्बर 2012.
110. ↑ "Round Table India — The Problem of the Rupee: Its Origin and Its Solution (History of Indian Currency & Banking)". Round Table India. मूल से 1 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 एप्रिल 2018.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

111. ↑ "Ambedkar Lecture Series to Explore Influences on Indian Society". columbia.edu. मूल से 21 दिसंबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 एप्रिल 2018.

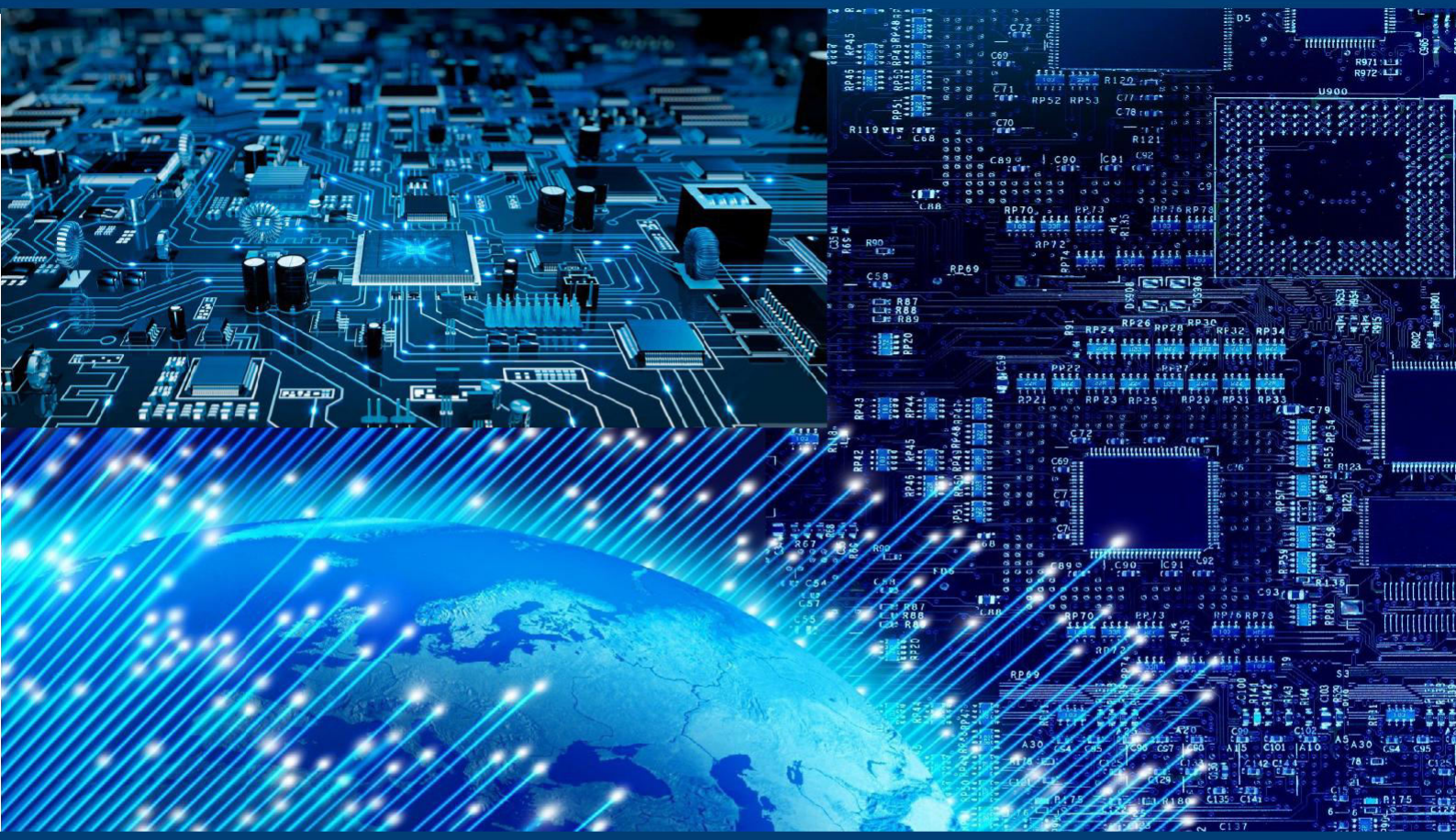

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |